डॉ. हेमन्त लोदवाल - 2-5-20

M.A. II nd sem

भारत का इतिहास (550 ई. - 1200 ई.)

भोज परमार (1010 - 1055 ई.)

मोडासा ताम्रपत्र लेख के अनुसार सिन्धुराज की मृत्यु लगभग 1010 ई में हुई। उसके बाद उसका पुत्र भोज परमार वंश का शासक बना। इसकी गिनती भारत के महानशासकों में की जाती है। भोज परमार के इतिहास जानने के लिए साहित्यिक एवं अभिलेख साक्ष्य प्राप्त होते हैं। साहित्यिक स्रोतों में जैन ग्रंथ, अलबरुनी एवं अबुल-फजल के लेख मुख्य है, तथा अभिलेखों में बाँसवाडा, बेतवा, उज्जैन, कल्वन एवं तिलकवाड़ से प्राप्त अभिलेख भोज के शासन काल की घटनाओं की जानकारी प्रस्तुत करते है।

सैनिक विजयें :- उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार भोज ने चेदीश्वर, इन्द्ररथ, तोग्गल राजा भीम कर्णाट, लाट और गुर्जर राजाओं तथा तुर्कों पर विजय प्राप्त की। अत: अन्य साक्ष्यों के आधार पर भोज द्वारा किये गये सैनिक अभियानों का विवरण निम्नानुसार है—

(1) कर्णाट के चालुक्यों से युद्ध :- कर्णाट के चालुक्यों से परमार वंश की पुरानी शत्रुता थी। भोज के काल मे भी इन दोनो राजवंशो मे संघर्ष चलता रहा। 'भोजचरित' के अनुसार भोज ने चालुक्य नरेश तैलप पर आक्रमण कर उसे बन्दी बनाकर उसकी हत्या कर दी। यह विवरण पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि भोज के समय कर्णाट का चालुक्य शासक जयसिंह II था ऐसा प्रतीत होता है कि भोज ने जयसिंह II (चालुक्यराज) को परास्त करने के लिए कलचुरि नरेश गांगेयदेव और चोल नरेश राजेन्द्र चोल के साथ मैत्री सम्बंध स्थापित किये थे, प्रारम्भ मे कुछ सफलता मिली हो, लेकिन अंत में जयसिंह II ने इन सबको पराजित कर दिया। इसका उल्लेख बेलगाँव अभिलेख से इसकी पुष्टी होती है।

II लाट नरेश से युद्ध :- काल्वन अभिलेख एवं उदयपुर प्रशस्ति में भोज द्वारा लाट विजय का उल्लेख है। पूर्वकाल में लाट नरेश बारप्प परमारों की अधीनता में था। भोज के समय लाट नरेश बारप्प का पौत्र कीर्तिराज था। भोज ने कीर्तिराज पर आक्रमण कर उसे परास्त कर उसके स्थान पर यशोवर्मन को शासक बनाया। यशोवर्मन के कल्वन अभिलेख से ज्ञात होता है कि वह नासिक जिले 1,500 ग्रामों पर भोज ने नियुक्त प्रशासक नियुक्त किया था। इससे स्पष्ट होता है कि राजा भोज ने दक्षिण अभियान में लाट क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था।

(3) कोंकण पर विजय ! कोंकण मे शिलाहार वंश का राज्य था। भोज के शिलाहार वंश के केशिदेव से सम्बंध अच्छे नही थे। लाट विजय के बाद कोंकण पर आक्रमण किया तथा वहाँ के राजा को परास्त कर अपनी अधिनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। भोज के बाँसवाड़ा तथा बेतवा अभिलेख से इसकी पुष्टि होती है।

(4) इन्द्ररथ पर विजय :- उदयपुर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि भोज ने इन्द्ररथ को पराजित किया। कुछ इतिहासकार इन्द्ररथ का समीकरण उड़ीसा के आदिनगर के शासक से करते है।

(5) तुरुष्कों से युद्ध :- भोज के काल मे महमूद गजनवी के आक्रमण हो रहे थे अतः विद्वानो का मत है कि गजनवी के किसी सेनानायक से भोज का युद्ध हुआ होगा। कुछ विद्वानो का मत है कि महमूद गजनवी ने जब पंजाब के शासक आनन्दपाल पर आक्रमण किया, तब आनन्दपाल की ओर से एक संघ ने उससे युद्ध लड़ा था जिसमें उज्जैन ग्वालियर, कालिंजर, कन्नौज और दिल्ली के शासकों ने अपनी-अपनी सेनाएँ भेजी थी।

(6) कलचुरियों से युद्ध :- कल्वन अभिलेख एवं उदयपुर प्रशस्ति के अनुसार भोज ने चेदिराज पर विजय प्राप्त की। भोज के समय चेदि राज्य पर गांगेय विक्रमादित्य (1019-1042 ई.) तथा उसके पुत्र कर्ण (1042-1072) का शासन था। परमार भोज और कलचुरि गांगेय विक्रमादित्य साम्राज्यवादी नीति के तहत प्रतिहारों पर अधिकार करना चाहते थे इसलिए आपस में संघर्ष हुआ और इस संघर्ष में गांगेय विक्रमादित्य पराजित हुआ। इसके बाद गांगेय का पुत्र कर्ण के साथ भी संघर्ष चलता रहा। कर्ण ने चालुक्य नरेश भीम के साथ मित्रता कर, परमार राज पर आक्रमण किया, लेकिन कर्ण को सफलता नहीं मिली।

(7) चन्देलों से युद्ध ! - विद्याधर (1025-1040 ई.) भोज का समकालीन था। परमार राज्य के उत्तर पूर्व में स्थित था। (जेजाकभुक्ति - बुन्देलखण्ड) चन्देलों की राजधानी महोबा थी। विद्याधर ने कन्नौज के प्रतिहार शासक राज्यपाल को परास्त किया। परमार अभिलेखों मे भोज एवं चन्देलों के मध्य किसी संघर्ष का वर्णन नही है, लेकिन चन्देलों के महोबा अभिलेख में वर्णन किया है कि 'कलचुरि चन्द्र और भोज ने विद्याधर की वैसी ही पूजा की जैसे कोई शिष्य अपने गुरू की करता है। सम्भवतः भोज का विद्याधर से कोई संघर्ष हुआ इसका कोई प्रमाण नही मिलता।

⑧ <u>कच्छपघातों से युद्ध</u> :- भोज स्वयं कन्नौज पर अधिकार करना चाहता था, लेकिन भोज एवं कन्नौज के बीच दो कच्छपघात की शाखा स्थित थी, प्रथम दूबकुण्ड के कच्छपघात एवं दूसरी शाखा ग्वालियर की थी। ये दोनो चन्देलों की आधिनता में थे।

दूबकुण्ड के कच्छपघात शासक अभिमन्यु ने प्रतिहारो के विरुद्ध भोज से मित्रता की। क्योंकि प्रतिहार दोनो के शत्रु थे। लेकिन भोज, ग्वालियर के शासक कीर्तिराज को अपने पक्ष में नही कर सका। भोज के द्वारा कन्नोज अभियान में कच्छपघात अभिमन्यु का सहयोग मिला होगा।

भोज ने ग्वालियर के कच्छपघात शासक कीर्तिराज पर आक्रमण किया, लेकिन भोज इस युद्ध में पराजित हुआ। सासबहू अभिलेख में कीर्तिराज द्वारा मालवा की सेना की पराजय का उल्लेख है। सम्भव है कि इस युद्ध में विद्याधर चन्देल का कीर्तिराज को सहयोग मिला हो

<u>कन्नोज पर आक्रमण</u> :- उदयपुर प्रशस्ति एवं मेरूतुंग द्वारा रचित प्रबन्धचिन्तामणि से ज्ञात होता है कि भोज ने कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार नरेश को पराजित कर अधिकार कर लिया।

<u>चाहमानों से युद्ध</u> :- भोज ने सपादलक्ष (शाकम्भरी) के चाहमान राज्य पर आक्रमण किया। इस युद्ध मे वीर्यराम को पराजित किया। भोज ने नाड़ोल के चाहमान राज्य पर भी अधिकार कर लिया। नाडोल में अणहिल्ल का शासन था। भोज का अणहिल्ल से युद्ध हुआ जिसमें भोज की पराजय हुई। भोज का सेनापति साढ़ा मारा गया। विद्वान मानते है की भोज का शाकम्भरी पर प्रभाव कुछ समय तक रहा होगा।

<u>गुजरात के चालुक्यों से युद्ध</u> :- भोज के समकालीन चालुक्य नरेश शासक दुर्लभराज (1009 ई-1024 ई.) एवं भीमदेव प्रथम (1024 ई 1064 ई.) थे प्रारम्भ में भीम से मित्रता थी, बाद मे शत्रुता हो गई। जब गुजरात में भीषण अकाल पड़ा तब भोज भीमदेव पर आक्रमण करना चाहता था। लेकिन भीम के प्रयासों से यह आक्रमण तैलप के राज्य की ओर घूम गया। दूसरी बार जब भीम सिन्ध के आक्रमण में व्यस्त था, तब भोज ने सेनापति कुलचन्द को चालुक्य राजधानी अनहिलपाटन को लूटने हेतु भेज दिया। और उसने अनहिलपाटन को खूब लूटा। सोमेश्वर ने कीर्तिकौमुदी में लिखा है कि भीम ने धारा के राज को पराजित किया और उसे जीवन दान दिया।

इस प्रकार भोज द्वारा अनेक युद्ध किये गये। ऐसा लगता है कि भोज के शासन काल के अन्तिम चरण में उसके शत्रुओं ने एक संघ का निर्माण कर लिया था। इस संघ में चालुक्य नरेश भीम प्रथम, कलचुरि नरेश कर्ण और सम्भवत: लाट नरेश त्रिलोचनपाल सम्मिलित थे। इस संघ ने भोज पर आक्रमण किया और युद्ध के दौरान ही भोज की एक रोग से 1055 ई. में मृत्यु हो गयी।

साम्राज्य विस्तार :- भोज ने अनेक विजयों द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार किया। पूर्व में कलिंग और चेदि तक; उत्तर एवं पूर्वोत्तर में ग्वालियर और उत्तर प्रदेश तथा बिहार का कुछ भाग; पश्चिम में लाट प्रदेश, समुद्रतटीय अपरान्त क्षेत्र एवं कोंकण; तथा उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम में मेवाड़ एवं मारवाड़ का बड़ा भाग इसके साम्राज्य के अन्तर्गत था।

भोज की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जयसिंह शासक बना। उसने 1080 ई. तक शासन किया जयसिंह के बाद सम्भवत: भोज का भाई उदयादित्य मालवा का राजा बना। उसने चाहमान नरेश विग्रहराज तृतीय के साथ सन्धि कर अपना राज्य को सुरक्षित रखा। उदयादित्य ने भिलसा में उदयपुर नामक स्थान पर नीलकण्ठेश्वर मन्दिर का निर्माण करवाया। उसने 1086 ई. तक शासन किया। उसके पश्चात् लक्ष्मणदेव, नरवर्मन एवं यशोवर्मन ने क्रमश: शासन किया।

—x—